Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

भवमूति के प्रकृति चित्रणों में रस योजना

दिपचन्द्र चौरसिया
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

शोध आलेख सार– भवभूति का प्रकृति का चित्रण यथार्थ और स्वाभाविक है। उन्होंने बिना किसी परिवर्तन के प्रत्यक्ष देखे गए दृश्यों के उसी रूप में चित्रित किया है। इस सन्दर्भ में उन्होंने न तो पुरातन कवियों का अनुकरण किया है और न ही वे किसी से प्रभावित हैं। उनके प्रकृति चित्रण में मौलिकता, नवीनता, सरसता, स्वाभाविकता कमनीयता एवं भावुकता के दर्शन होते हैं। इस प्रकार उन्होंने अपनी प्रकृति सुन्दरी को सहज रूप में प्रस्तुत कर संस्कृत जगत् को एक नई दिशा प्रदान की है।

मुख्य शब्द– काव्य, प्रकृति, नाट्य, कालिदास, रामचरित, भवमूति, अलौकिक, उददीपन, आलम्बन।

काव्य में प्रकृति वर्णन अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है नाट्य काव्य में तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि नाट्य के अधिकांश दृश्य का प्रकृति के रस वातावरण में ही होता है चाहे वो कालिदास का ..... शाकुन्तलम् हो या भवमूति का रामचरित संस्कृत में कालिदास भवमूति प्रभृति कवियों ने प्रकृति के वर्णन में अलौकिक क्षमता ..... है। बाह्य प्रकृति का वर्णन भारतीय साहित्य में दो प्रकार से उपलब्ध है। (1) उददीपन के रूप में नया (2) आलम्बन के रूप में।

प्रकृति मनुष्य के भावों पर सदा अपना प्रभाव जगाती है। वह उसके भावों को तीव्र तथा उदीप्त किया करती है। प्रेमी की सुरत प्रेम भावना को प्रकृति की रमणीयता झकझोर कर जगा डालती है। तडाण में .... हुए कमल उपवन में विकशित पुष्प और प्रकाश स्वयं में झुकती हुई कोई का वर्णन हमारे अधिकांश कवि उद्दीवन विभाव के ही भीतर करते है और यह करना उचित ही है। परन्तु इससे पृथक है प्रकृति का स्वतन्त्र रूप से वर्णन आलम्बन के रूप में काव्य में उसकी पतिष्ठा यह तभी सम्भव होता है जब कवि की दृष्टि प्रकृति के मानव हृदय पर होने वाले प्रभावों की ओर न जाकर प्रकृति के प्रकृत स्वभाविक रूप की ओर स्वत आकृष्ट होती है। बाह्य प्रकृति स्वयं सुन्दरता की राशि है परन्तु इसको परखने के लिए चाहिए। कवि की ... दृष्टि जो प्रकृति के रूप में विश्लेषण अपना प्रधान कार्य मानती है। प्रकृति का आलम्बन रूप से वर्णन अपने को दूसरे प्रकार के वर्णन से स्वतः पृथक कर देता है। शब्दों के माध्यम द्वारा प्रकट किए गए पदार्थ दो प्रकार से अर्थ को अभिव्यक्त करते है–

1. अर्थ–ग्रहण और 2. निम्न ग्रहण।

अर्थ–ग्रहण का अर्थ है, किसी पदार्थ का सामान्य रूप प्रस्तुत करना। बिम्ब ग्रहण से तात्पर्य है उस वस्तु के स्वरूप्राधामक चित्र से उदाहरण के लिए किसी ने कहा कोकिल दूसरा सामान्य अर्थ हुआ एक प्रकार की विशिष्ट चिड़िया, परन्तु इस शब्द के उच्चारण करते ही यदि श्रंता के सामने लाल ओंश्व वाली स्वल्पकाय तथा काले रेग की चिड़िया की मूति झलकने लगती है तो समझना चाहिए कि यहाँ बिम्ब ग्रहण हेा रहा हैं। आशय यह है कि कवि जब प्रकृति के पदार्थों का केवल नाम ग्रहण कर अर्थात उनका अलग–अलग नाम गिनाकर अपने कर्त्तव्य को समझता है तब वह यथार्थ रूप में प्रकृति वर्णन नहीं करता। प्रकृति की प्रकृत प्रतिष्ठा काव्य में तभी होती है जब कवि पूर्ण सरिलष्ट वर्णन प्रस्तुत करता है। आम के पेड़ पर बैठी कोयल बोल रही है यह होगा प्रकृति का असश्लिपट वर्णन। परन्तु वसन्त के आगमन पर हरे–भरे आम के पेड़ों की पीली मंजरियों से लदी हुई, के झोकों से झुकती हुई डालियों के ऊपर बैठे हुई लाल नेत्रवाली काले रंग की कौयल स्वर में कूंक रही है वह हुआ प्रकृति का संश्लिप्ट वर्णन। शब्द का अर्थ है कवि समस्त आवश्यक पदार्थो का एकत्र आग्लिगन करकर इतना सुन्दर वर्णन करता है कि प्रकृति का चित्र रंगों के सामने प्रत्यक्ष हो उठता है। भारतीय साहित्य में प्रकृति–वर्णन का संश्लिष्ट रूप परम्परा से किया गया, पाया जाता है। संस्कृत के मान्य कवियों वाल्मीकि व्यास, भवभूति आदि ने प्रकृति के इसी रूप का चित्रण अपने नाट्य ग्रन्थों में अत्यन्त सूक्ष्मता, मार्मिकता तथा स्निग्धता के साथ किया है।

प्रकृति का निरीक्षण प्राकृतिक दृश्यों के यथार्थ चित्रण के लिए कवि में निरीक्षण शक्ति का होना अत्यन्त आवश्यक है। प्रकृति नानारूपात्मक होती है। उसके इन रूपों का सूक्ष्म अवलोकन कर जो कवि अपनी शब्द तूलिका के द्वारा इनका चित्रण करता है, वही वास्तविक कवि है। हमारे प्रेम कवि भवभूति में यह निरीक्षण शक्ति प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है। कवि ने अपनी रचनाओं में प्रकृति के अनेक पक्षो का विवरण प्रस्तुत किया है। सचमुच सच्चा कवि वही होता है जिसका मन प्रकृति के नाना रूपों में रमता है जो केवल प्रकृति की सुषमा, कोमलता तथा सुन्दरता के ही उपर रीस्ता है वह क्या प्रकृति का सच्चा प्रेमी माना जा सकता है प्रकृति की मृदुलता के ही समान प्रकृति के उस भाव भचंकरता, कठोरता और विषमता के द्वारा भी जिस व्यक्ति का चित्र विस्फारित होकर आहलाद का अनुभव करता है इम उसे ही सच्चा प्रकृति प्रेमी मान सकते है। महाकवि भवभूति का प्रकृति वर्णन प्रकृति के सौम्य पक्ष के निलास की मधुर झाँकी तो प्रस्तुत करना ही है, साथ ही प्रकृति के उस रूप का भी वर्णन अपने काव्य में सूक्ष्मता से करके पाठकों के हृदय को आहलादित करता है। कवि के लिए चित्र को रंगीन बनाने की नहीं जरूरत होती है। कवि चित्रकार होता है चित्रकार अपनी तूलिका से चित्र में रंग भरता है और कवि अपनी लेखनी से शब्दों के माध्यम से वर्णमय चित्र की योजना करता है। इस कार्य में संश्लिष्ट चित्र की चारूता बड़ी मुग्धकारिणी होती है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमें भवभूति के इस सुन्दर श्लोक में मिलता है–

यह समदशकुत्ता क्रान्त वालीरवीरूत
प्रसव–सुरभि–शीत रवच्छतोया वहिन्त।
फलभरपरिणामश्याम जम्बूनिकरज

संस्कृत कवियों के प्रकृति चित्रण में एक बात और यातव्य है। संसार के समस्त पदार्थो में चेतना का साक्षात्कार करने वाले कवियों की दृष्टि में बाहन प्रकृति सजीवता की मूर्ति है। हमारे कवियों ने वनलक्ष्मी और वनदेवता की कल्पना की है और चराचर विश्व में व्याप्त एक प्रकृति का दर्शन तथा उनकी अव्यता सूचित करने के लिए उसे देवी के रूप में अंकित किया। प्रकृति तथा मनुष्य दोनों का संबंध इतना प्राचीन तथा मार्मिक है कि मनुष्य प्रकृति के सहयोग तथा सहानुभूति के अभाव में पनप नहीं सकता। उसका जीवन एकांगी हो जाता है तथा वह अपने

उद्देश्य की पूर्ति में सफल नहीं होता। महाकवि अवभूति ने अपने उत्तररामचरित में वासत्ती नाम से वन देवता नाम रूप में अंकित किया है। सीता के एिनग्ध हृदय भी साक्षिणी वासन्ती उगली अकृत्रिम सुहृदा है। राम के द्वारा सीा अरित्याग रूपी निर्मन अत्याचार को सुनकर वह क्रुद्ध हो जाती है और रामचन्द्र को रलाटना देते हुए वह उनकी कठोर भर्त्सना करती है वासत्ती के उलाहने में इतकी मर्मरपशितों वाते है कि राम का हृदय दुःख तथा आशंका के आघात थे कोप उठता है। वनदेवता वासनो का वह सुन्दर चित्र अवभूति की कोमल कला का विलास है। मनुष्य से अगम्य तथा असाध्य कार्य का सम्पादन कर वनदेवता को मानवहृदय के साथ गहरी सहानुभूति एकतानता तथा एकसूत्रता का परिचय बड़े ही मर्मस्पर्शी शब्दों में चित्रित किया गया है। भवभूति ने प्रकृति को मानव जीवन की शोधिका के रूप चित्रित किया है। ये महाकवि प्रकृति के उसरूप के ही देखने वाले तथा वर्णन करने वाले कही हैं, प्रत्युत प्रकृति के अन्नराल में विराजमान व्यवस्था अपराध मार्जन और कालुसूत्र विभंजना शक्ति के भी है।

प्रकृति मानव की चिर सहचरी है उसका मानव जीवन के साथ आदि काल में ही सम्बन्ध नही है। भारतीय जनजीवन के हम प्राकृतिक उपादानों से पृथक नहीं सकते। भारतीय जनजीवन प्राकृतिक उपादानों के साथ पूर्णतया अनुस्भूत है। वैदिक मन्त्र द्रष्टाओं ने भी प्रकृति सुन्दरी के सुन्हरे अचल में ही विराजमान होकर साममायन का स्वर झुकृत किया था। भारत की प्राकृतिक सरचना अत्यन्त सजीव एवं सुन्दर है। अतः भावुक कवि का उसके पति आवृत्त होना सर्वथा सवाभाविक है। यही कारण है कि यहाँ के प्राय सभी कवियों ने प्रकारण प्रद्धति के साथ अपना सम्बन्ध अवश्य हो महाकवि भवभूति भारतीय परम्परा के विशुद्ध कवि है। वहाँ .... है कि उनकी कृतियों में प्राकृतिक तत्वों से प्रभावित भारतीय जनजीवन अपने सहज रूप में प्रतिनिधित हुआ है। इसी से उनकी कृतियों में प्रवृत्ति अपने स्वाभाविक विलास को लेकर स्पन्दित हो उठी है।

महाकवि भवभुति ने प्रकृति के साथ तादाम्ब की स्थापना की है। वे प्रकृति को सजीव तथा मानवीय भावनाओं से परिपूर्ण मानते है। उनके अनुसार मानव के ही समान वह भी सुख तथा दुःख का अनुभव करती है। वह मानव जगत के साथ पूर्णतया सम्बन्धित है। मनुष्य के दुःख–सुख में वह सहयोग करती है। इस प्रकार मनुष्य तथा प्रकृति एक दूसरे के लिए पूरक का कार्य करते है। यद्यपि नाटक में कवि को प्रवृत्ति चित्रण का स्वातन्त्रता नहीं रहता जितना महाकाव्य में। फिर भी महावि भवभुति ने प्रकृति चित्रण के प्रति अपने सहज स्नेह को दिखलाते हुए अपने टीलों नाटकों में अनेक स्थानों पर प्रकृति का अवसरानुकूल चित्रण किया है। महाकवि भवभूति के प्रकृति चित्रण की यह असाधारण विशेषता है कि उन्होंने उसके कोमल एवं रूक्ष दोनों पक्षों को यथावसर चित्रित किया है। इस विषय में ने किसी से प्रभाव होकर उसकी ओर आकृदट नहीं हुए है। इस प्रकार प्रकृति चित्रण में उन्होंने सगे और सौतले भाव के प्रश्रय नहीं दिया है। उनके प्रकृति चित्रणों से ऐसा लगता है कि उन्होंने प्रकृति का अत्यन्त निकट से साक्षात्कार किया है। इस सन्तिकटता से ही वे उसके साथ आत्म संबंध स्थापित करते है।

महावीरचरित तथा मालतीसाधव में प्रायः अवसरानुकूल प्रकृति का चित्रण आलम्बन रूप में किया गया है। मालतीसाधव में हमें प्रकृति का उद्दीपन रूप भी मिलता है। उतररामचरित में मानव का प्रकृति के साथ निष्ठ सम्बन्ध दिखाई देता है। उतररामचरित को प्रकृति सांख्य की तरह निकृति का रूप धारण कर लेती है। उसकी यह निकृति उस समय स्पष्ट होती है जबकि वह स्वयं मानवीय रूप को धारण कर रंग मंच पर उपस्थित होती है। वह केवल रंगमंच पर ही उपस्थित नहीं होती है अपितु मानव सुलग व्यापार में प्रवृत्त होती है यही कारण है कि वह नाटक के अन्यान्य पात्रों के साथ सहानुभूति दिखलाती है, सहायता करती है और उनके सुख–दुःख में भागोदार बनती है,

भगवती वसुन्धरा भागीरथी, तमसा, मुरला, गोदावरी तथा वनदेवी वासन्ती इस नाटक के उत्कर्ण में अत्यन्त सिद्ध होती है।

उत्तररामचरित नाटक का प्रारम्भ हो अयोध्या के वैभव सम्पन्न राजप्रसाद से होता है परन्तु कवि का कोमल हृदय वहाँ अधिक समय तक नहीं ठहर पाता और वह प्रकृति सुन्दरी के कोड में सहसा ही पहुँच जाता है। तभी तो कवि चित्र वीषिका में अनेकानेक प्रकृति के सुन्दर दृश्य प्रस्तुत करता है। तपोवन, प्रसवण पर्वत पंपासरोवर तथा गिरि है रमजीक दृश्य .... राग कहते हैं–

राम–देवि पर रमजीयमेरसर

द्वितीय अंक में कवि ने प्रकृति के रमणीक और दोनों रूपों के प्रस्तुत किया है। इस विषय में वे पूर्ण सफल हुए है। प्रकृति के मनोरम रूप का दर्शन निम्नलिखित श्लोकों में देखा जा सकता हैं–

एतत एव विरनो विसवन्मचुरा
स्तान्येव मत्तहारिणानि वनस्वलानि।
आमंजुवंजुलललाति च
नीरध्रनीलनिचुलानि सरित्तटानि।
मेहामालेव यश्चायमारादिव विभाव्यते।
गिरि प्रस्रवण सोऽभमत्र गोदावरी नदी।।[3]

प्रकृति के रूक्ष एवं सभावह रूप का दर्शन निम्नलिखित गद्य पद्यांश में देखा जा सकता है–

एतानि श्वलु सर्व भूतरोमहर्षणाणान्मुन्मत्तचण्डश्वापदकुलक्रान्तविकट गिरिगटवराणि जनस्थानपर्यन्तदीर्घारण्चानि दक्षिणा दिशमभिवर्तन्ते तथाहि–

निष्कूजस्तिमिता क्वचित्वर्वाचदपि प्रोच्चण्डसवस्वना
स्वेच्छाखुप्तग भीर भोग भुजगश्वासप्रदीप्ताग्नयः।
सीमानः प्रदरोदरेषु विरलस्वल्पाम्भसो यास्वयां
तृष्यन्द्रिः प्रतिसूर्चकैरजगरस्वेदद्रव पीयते।''[4]

भवभूति की प्रकृति निरीक्षण की सूक्ष्म दर्शिता का ज्ञान भी इसी अंक में हो जाता है, अनेक वर्षो के पश्चात् राम जब पंचवटी के पार्श्ववर्ती भागों का भवलोकन करते है तो वे प्रकृति के परिवर्तित रूप को देखकर इस प्रकार कहते हैं–

पुरा यन सोतः पुलिनमधुना जप सरितां
विपर्यासे यातो धनविरज भाष अतिरूहाम्।
बहोर्दृष्टं कालादपरमिव मन्ने वनानिदं
निवेशः शैलानां तदिदमिति बुद्धि हृदयति।।[5]

यहाँ महाकव भवभूति ने प्राकृतिक विाकरों को एक वैज्ञानिक की तरह चित्रित किया है। इसी प्रकार द्वितीय अंक के अन्त में नदियों के पवित्र संगम का सुन्दर चित्रण किया है।

तृतीय अंक में तो प्रकृति चित्रण पराकादठा पर ही पहँच जाता है। इस अंक में कवि ने प्रकृति का मानवीकरण का उसे अद्‌भुत रूप में प्रस्तुत किया है। यहाँ तमसा, मुरला और वनदेवी वासन्ती मानव शरीर में रंगमंच पर आती है।

आश्चर्य का विषय तो यह है कि सीता देवी भगवती भागीरथी के पावन क्रोड में अपने पुत्रों को जन्म देती हैं। वे स्वयं ही दोनों पुत्रों को स्तन्यत्याग के पश्चात् महर्षि वाल्मीकि को सौंपती हैं। इस अंक में तो प्रकृति और पुरूष समवेत रूप में एक परिवार के रूप को धारण कर लेते हैं। वन्य करिकलभ सीता का स्नेहपात्र पुत्र है। राम उसके कान्तानुवृत्तिचातुर्य का वर्णन करते हुए इस प्रकार कहते हैं–

लिलोष्वातमृणालकाण्डकवलच्छेदेणु संपादिताः
पुष्यप्पुष्करवासितस्य पायसो गण्डूणसंक्रान्तयः।
सेकः शीकरिण करेण निहितः कामं विरागे पुन
र्यत्स्नेहादनरालनालनलिनीपत्रातपत्रं धृतम्।।[6]

अपनी प्रिय सहचरी सीता के द्वारा परिवधिंत गिरि मचूर को राग को दिश्वलाती हुई बासन्ती इस प्रकार कहती है–

अनुदिवसमवर्धयटिप्रया ते
समचिरनिर्गतमुग्धलोलबर्हम्।
मणिमुकुट इवोच्छिश्वः कदम्बे
नदति स एथ वधू सश्वः शिश्वण्डी।।[7]

जिस मयूर को सीता ने अपनी तालियों को बाजार नचाया था, उसके प्रति राम का हार्दिक अनुराग होना स्वाभाविक ही है।

राम के दण्डकारण में पहुँचने पर वासन्ती को अत्यधिक हर्ष होता है और वे अन्य वृक्ष, वायु एवं पक्षियों से निवेदन करती है कि मकरन्द की वृदिट करने वाले वृक्ष फूल और फलों से अर्ध्य हैं। विकसित कमलों के सुगन्ध वाले वन के वायु बहें। अनुराग युक्त कण्ठवाले पक्षी मधुर कलरव करें। क्योंकि वे महाराज राम पुनः स्वयं वन में आये हुए हैं–

ददतु तरवः पुष्पैरर्ध्य फलैश्च मधुश्च्यूतः
स्फुटितकमलामोदप्रायाः प्रवान्तु वनानिलाः।
कलमविरलं रज्यत्कण्ठाः क्वणन्तु शकुन्तयः
फनरिदमयं देवो रामः स्वयं बनगागतः।।[8]

यह श्लोक हमें महाकवि कालिदास के उस श्लोक का स्मरण दिला देता है जिसमे वे शकुन्तला के पतिग्रहणन के समय पर वन्य वृक्षों से अनुज्ञा लेते हैं–

पातुं न प्रथम व्यवस्यति जलं चुदमास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आधे वः कुसुमप्रसूतिसमये भस्या भवत्युत्सव
सेम भाति शकुन्तला पतिगृह सवैंरनुशयताम्।।[9]

जिस स्थान के पशु–पक्षियों एवं वृक्षों से राम का पूर्व परिचय रहा है वे सब उन्हें बन्धु के समान लगते हैं। उनके प्रति अपनी मधुर भावनाक ो अभिव्यक्त करते हुए वे कहते हैं–

यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बान्धवो मे
यानि प्रियासहचरश्चिरमध्यवात्सम्।
एतानि तानि बहुकन्दरनिर्सराणि
गोदावरीपरिसरस्य गिरेस्तटानि।[10]

इस प्रकार हम देखते है कि तृतीय अंक में कवि ने मानव का प्रकृति के साथ अपूर्व सामंजस्य प्रस्तुत किया है। तृतीय अंक के इस प्राकृतिक व्यापार के कवि ने सम्पूर्ण नाटक को व्याप्त कर दिया है।

सप्तम अंक में नाटक के सुश्वद पर्यवसान में ये प्राकृतिक तत्व ही सहयोग करते हैं। वास्तविकता तो यह है कि महाकवि भवभूति ने प्राकृतिक उपादानों को लेकर नाटक में अपूर्व उदात्तता लादी है। उन्होंने अपनी करूणा की सामान्य मूर्ति को प्राकृतिक उपादनों से समलंकृत किया है। जिस प्रकार से भभिज्ञानशाकुन्तल से प्रकृति को पृथक कर देने पर शकुन्तला नहीं रहती है, उसी प्रकार उत्तररामचरित से प्रकृति को पृथक् कर देने पर रामसीतारूपी करूणा करूणा नहीं रहती है।

नाटक के कथानक की कल्पना में भी प्रकृति पूर्ण सहयोग करती है। निर्वासित सीता की रक्षा करने वाले प्राकृतिक तत्व ही हैं। गंगा और पृथ्वी ये दोनों पात्र अरूधती और कौशल्या के समान हैं। वनदेवता वासन्ती जहाँ एक ओर वन की लक्ष्मी है, वहीं दूसरी ओर नाटक की वृद्धि करने के कारण नाटक की लक्ष्मी है। महाकवि कालिदास प्रकृति का मानवीकरण करते हैं, परन्तु महाकवि भवभूति तो उसके द्वारा मानव साध्य कार्य करवाते हैं।

उत्तररामचरित के दृश्यों में भी प्रकृति का सुन्दर रूप मिलता है। प्रथम अंक में चित्रदर्शन में प्राकृतिक साज–सज्जा के दर्शन होते है। द्वितीय और तृतीय अंक तो प्रकृति से साक्षात् सम्बद्ध कर दिए गए है। चतुर्थ पंचम अंक की घटनाएं प्रकृति परिवृत्त महर्षि बाल्मीकि के आश्रगपद में घटित होती हैं। छठे अंक की भी यही स्थिति है। सातवें अंक में तो गंगा के बालुकामय तट पर गभाँक के द्वारा राम और सीता के मिलन का दृश्य प्रस्तुत किया गया है। कवि ने प्रकृति के कोमल और रूक्ष दोनों ही पक्षों को स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया है जिसका कथन उन्होंने स्वयमेव किया है–

'स्निग्धश्यामाः क्वचिदपरतो भीषणायोगरूक्षाः''

इस प्रकार हम कह कसते हैं कि भवभूति का प्रकृति का चित्रण यथार्थ और स्वाभाविक है। उन्होंने बिना किसी परिवर्तन के प्रत्यक्ष देखे गए दृश्यों के उसी रूप में चित्रित किया है। इस सन्दर्भ में उन्होंने न तो पुरातन कवियों का अनुकरण किया है और न ही वे किसी से प्रभावित हैं। उनके प्रकृति चित्रण में मौलिकता, नवीनता, सरसता, स्वाभाविकता कमनीयता एवं भावुकता के दर्शन होते हैं। इस प्रकार उन्होंने अपनी प्रकृति सुन्दरी को सहज रूप में प्रस्तुत कर संस्कृत जगत् को एक नई दिशा प्रदान की है।

सन्दर्भ

1. उत्तररामचरितम् 3/16
2. त्रतैव 2/23
3. त्रतैव 1/24

4. त्रतैव 1/26
5. उत्तररामचरितम् 3/16
6. तत्रैव 3/18
7. तत्रैव 3/24
8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/7
9. उत्तररामचरितम् 3/8